कथा-खंड

अकेली औरत

डॉ. क्षमा सिसोदिया, उज्जैन

'सुष्मिता' का मन आज कुछ ज़्यादा ही उखड़ा था।
सुबह के समाचार से उसके दिमाग के कल-पुर्जे ही बिगड़ गये थे। मनचले युवकों ने एक पागल औरत के ऊपर हमला करके उसकी इज्जत तार-तार कर दिया।
ऐसे लोग इंसान होते हैं या इंसान के रूप में भेड़िया रहते हैं? यह लोग इंसान के नाम पर कलंक होते हैं, जो पूरे मानव समाज के लिए ख़तरनाक होते हैं। अख़बार में पढ़े हुए समाचार से सुष्मिता का दिमाग़ भन्नाया हुआ था।

प्रतिदिन ऑफिस के लिए निकलते हुए नुक्कड़ पर उसे दो-चार चेहरे दाँत निपोरते हुए दिखाई देते रहते थे और उनसे बचने लिए 'सुष्मिता' रोज सिर झुकाकर चुपचाप निकल जाती थी लेकिन आज तो घर से ही अपने दिमाग की पूरी सर्विसिंग करके निकली थी, जैसे ही उन शरारती चेहरों ने रोज़ की तरह छींटाकशी करने की कोशिश किए, 'सुष्मिता' का झुका हुआ चेहरा आसमान की तरह तन गया और वह सीधे उन छिछोरों के पास पहुँच गयी।

"क्या कहा आप लोगों ने; मुझे कुछ सुनाई नहीं दिया,मेरे कान थोड़ा ऊँचा सुनते हैं।हिम्मत है, तो जोर से बोलो, ताकि बाकी लोग भी सुन सकें।" रोज़ सिर झुकाकर जाने वाली सुष्मिता' के मुँह से आज इतनी तेज़ आवाज़ सुनकर अवारगी करने वाले लड़के घबरा गए।

"अगर तुम लोगों को औरतों को देखना इतना ही पसंद है, तो उसे मर्द बनकर देखो, ब्याह करके ले आओ, यह नामर्दों वाली हरकत क्यों करते रहते हो...?"
थोड़ी दूर चलने के बाद अगला कदम आगे बढ़ाने के वजाए 'सुष्मिता' पलटी और शेरनी की तरह दहाड़ती हुई बोली-

"मर्द हो,तो कुछ काम-धंधा करो, मेहनत की रोटी कमाया करो और हाँ, पहले अपनी पैंट को सम्भाला तो सीख लो, कमर से नीचे लटकी हुई है, जो अपने शरीर के वस्त्र तक नहीं सम्भाल पा रहा हो, वह भला किसी औरत को क्या सम्भाल पाएगा?"

"आज के बाद अब कभी फब्तियां मत कसना, नहीं तो मेरी अँगुलियों के नाखून तुम लोगों के चेहरे का नक्शा बिगाड़ कर तुम लोगों का हुलिया समाचार-पत्र में छपवा देगें।"

"आज तो मैं परिपक्व हो चुकी हूँ, ऑफिस में काम करने लगी हूँ, सब कुछ बहुत अच्छे से समझती हूँ, जब कॉलेज में थी, तब तुम जैसे लड़कों से कभी नहीं डरी, अभी तक चुपचाप सिर झुकाकर इसलिए निकल जाती थी कि सुबह-सुबह तुम लोगों के साथ उलझकर अपना पूरा दिन ख़राब नहीं करना चाहती थी, तो तुम लोगों ने मुझे डरपोक समझ लिया? अरे मैं वो शेरनी हूँ, जो बिना कारण किसी पर आक्रमण नहीं करती है लेकिन जब आक्रमण करती है,तो उसके पंजे की जकड़ में फँसा शिकार बच नहीं पाता है,इसलिए 'शेरनी नामक इस औरत से अब बच कर रहना।

वर्षों से 'सुष्मिता' अपना हर काम अकेली ही तो करती आ रही है, साथ ही बीच-बीच में कुछ लोगों को अपने ऊपर कुछ ज्यादा ही मेहरबान होते हुए भी देखती रहती थी लेकिन मन से मजबूत 'सुष्मिता' नितान्त अकेली होने के बाद भी खुद को सम्भाले हुए थी।

हाँ, इधर बीच ऑफिस में शर्मा, वर्मा, गुप्ता, मिश्रा जी के स्वभाव की वजह से कुछ अवश्य परेशान रहने लगी है, आज उससे भी निपटने का रास्ता निकाल ही लिया है।

जन्म दिन की पार्टी के बहाने उसने अपने सभी सह-कर्मियों को भिन्न-भिन्न तरीके से वही खाद्य-सामग्री लेकर आने के लिए अपने घर पर निमंत्रित किया, जिसे देने के बहाने से वो लोग उसके नज़दीक आने की कोशिश करते रहते थे।

यह सुन कर सभी के अंदर मन ही मन लड्डू फूट रहे थे लेकिन उसमें से किसी को भी यह पता नही लगने दिया कि उनसे पहले भी वहाँ कोई और पहुँचेगा। वहाँ पहुँचने पर सभी सहकर्मी एक-दूसरे को देखकर हतप्रभ थे, सिर पर ओले पड़ते देख, कोई अपना सिर खुजला रहा था, तो कोई गले में अटकी हुई आवाज़ को बाहर निकालने के लिए टाई ढीली कर रहा था।

उसी समय 'सुष्मिता' ने अपने घर पर झोपड़-पट्टियों में रहने वाले कुछ गरीब बच्चों को भी बुलाया था।

केक काटने के बाद 'सह-कर्मियों' द्वारा लाए हुए खाद्य-सामाग्री को उनके हाथों से ही गरीब बच्चों में बँटवा दिया और रसोई में बने व्यंजनों और अन्य खाद्य-सामग्री से सभी का स्वागत-सत्कार किया।स्वागत करके 'रिटर्न-गिफ्ट' के साथ विदा कर दिया।रिटर्न गिफ्ट को खोलने की आतुरता से सभी बेहाल हो रहे थे।

"बंद लिफाफा…!!?"

लिफाफे में चिट्ठी देख कर तो सबकी आँखों में बिना पीए ही मदिरा-सा नशा चढ़ने लगा लेकिन आँखों ने जैसे ही काग़ज़ पर लिखे शब्दों का थर्मामीटर नापा, तो अंदर लिखे ताप को देखकर सबके होश उड़ गये। प्यार-मोहब्बत की जगह उसमें लिखा था-

"आप लोगों को क्या लगता है कि समाज में अकेली रहने वाली औरत 'सार्वजनिक-सम्पति' होती है?

जिस पर हर कोई अतिक्रमण करने की जुगाड़ में लगा रहता है?

वह कोई लावारिस पड़ी हुई निर्जीव सामान नही है,बल्कि जीती-जागती एक जिन्दगी है,जिसकी रजिस्ट्री माँ-बाप द्वारा दिए गए संस्कारों से बहुत पहले ही हो चुकी रहती है।"

आप लोग 'अकेली औरत' की सहायता करने के बहाने से जो चिकनी-चुपड़ी बातें करके डोरे डालते रहते हैं, उसकी जगह कभी यह बोलते हैं कि-"मैडम, नगरपालिका, न्यायपालिका या बिजली विभाग से संबंधित कोई काम हो, तो बताइए मैं जाकर कर आता हूँ ?"

वहाँ भीड़ में धक्के खाने के लिए भला कौन जाना चाहेगा लेकिन उसी औरत के नज़दीक आने के लिए सबको 'बाबू मोशाए' जरूर बनना रहता हैं। खाने-पीने की यह चीजें मुझे नहीं, इन गरीब बच्चों को दिया करें और हाँ-

"अपने दिमाग़ को यह बात अच्छी तरह से ठोक-पीटकर समझा दीजिएगा कि 'अकेली-औरत जब अपनी पूरी घर-गृहस्थी सम्भाल सकती है, तो क्या अपनी 'काया' को नही सम्भाल सकती है?"

"मुझे उन औरतों की तरह मत समझना,जो पति के रहते हुए दूसरे मर्दों के साथ भी संबंध बनाए रखती हैं और न ही उन औरतों की तरह समझना, जो अपने स्वार्थ हेतु दूसरे के पतियों को फँसाती रहती हैं।

आप लोगों को शायद नहीं पता है कि औरत अकेली होकर और मजबूत हो जाती है,पुरूषों की तरह कमजोर नही होती है, इसलिए आप लोगों को मुझे नही,बल्कि खुद को सम्भालने की अधिक आवश्यकता है।

मेरी यह छोटी सी बात समझ में आ जाए, तो ठीक है, वरना अब अगली मीटिंग आप लोगों के पत्नियों के साथ करूँगी। ख़त का मजमून समझते ही सबके हाथ का लिफाफा कचरे की बाल्टी में था।

दूसरे दिन 'सुष्मिता' जब आफिस पहुँची, तो इतने दिनों से जो आँखें उसके सूने माथे पर अटकी थीं, वो आज फाइल के पन्नों में उलझी हुई अपना-अपना काम रही थीं।अब उन्हें 'सुष्मिता' द्वारा कही हुई यह छोटी-सी बात बहुत अच्छी तरह से समझ आ गयी थी कि-

"अकेली औरत लावारिस पड़ी हुई कोई जमीन नहीं होती है, वो तो जीती-जागती एक जिन्दगी होती है, जिसकी रजिस्ट्री माँ-बाप के द्वारा दिए गए संस्कारों से बहुत पहले ही हो चुकी रहती है।"

साथ ही मेरे इस कथन को रट भी लेना कि-

"शेरनियाँ सिर्फ़ जंगल में ही नहीं रहती हैं, आप जैसे 'भेड़ के खाल में रहने वाले भेड़ियों' के लिए कुछ शहर के सड़कों पर और कुछ ऑफिस के गलियारों में भी रहती हैं,

जो ख़ुद की सुरक्षा ख़ुद से करने में पूर्णतः सक्षम होती हैं।"

डॉ. क्षमा सिसोदिया, उज्जैन